RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 38 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 23 फरवरी 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

13वीं पुण्यतिथि

स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती

(संस्थापक/सम्पादक पिघलता हिमालय)

21.5.1944 - 22.2.2013

आपकी दूरदृष्टि, आपके द्वारा किया गया चिन्तन-मनन व कार्य हमारे प्रेरणा श्रोत हैं। 13वीं पुण्यतिथि पर शत-शत नमन।

समस्त परिजन
एवं
पिघलता हिमालय परिवार

जसुसी बूढ़ी शौक्याणी की धरोहरों पर मंथन

जीर्णोद्धार एवं सौन्दर्यीकरण समिति ले रही है बराबर टोह

हल्द्वानी में होने वाले आयोजन ने इस धारा को बढ़ाया है

हल्द्वानी। पिघलता हिमालय के संस्थापक सम्पादक स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती का स्मृति समारोह में इस बार 'हिमालय के लोक व्यवहार में कला और विज्ञान' विषय पर केन्द्रित है। इसका मुख्य मुख्य केन्द्र दानवीरांगना लला जसुली बूढ़ी शौक्याणी हैं क्योंकि जिस प्रकार की कला नमूने उनकी धर्मशालाएं हैं और जिस प्रकार का विज्ञान पुराने समय के लोगों का रहा है, वह हमारे बुनियाद के पत्थर और इतिहास हैं। लला जसुली की धरोहरों को खण्डहर, अतिक्रमण से बचाने और इन्हें संरक्षित करने का अभियान इसके वंशजों ने उठाया है। जीर्णोद्धार एवं सौन्दर्यीकरण समिति कैलास यात्रा पथ पर तिब्बत तक चार सौ से अधिक धर्मशालाओं की बराबर टोह ले रही है। लगातार पत्राचार व अनुनय-विनय के बाद कुछ धर्मशालाओं के सौन्दर्यीरण में सफलता भी मिली है। लेकिन इहितास

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

ईशोपनिषद : १८ मन्त्रों वाली गागर में चिन्तन का महासागर

सूर्यकान्त बाली

दुनिया में ऐसी किताबें बहुत कम होंगी जो आकार में इतनी छोटी हों, पर जो किसी अतिविशिष्ट चिन्तन का अग्रदूत बनकर हमारे सामने आ जाएँ। ईशोपनिषद वैसी ही एक किताब है जिसमें सिर्फ 18 मन्त्र हैं, यानी छोटी छोटी 72 पंक्तियां हैं, पर हमारे देश के समग्र अध्यात्म चिन्तन पर जिसका असर लाजवाब है। जिस वक्त यह छोटी सी किताब लिखी गई तब इसका नाम ईशोपनिषद नहीं था और जब इसके लिखे जाने के करीब छह सात सौ साल बाद इसे इसका अपना नाम मिला तब तक इसमें दिया गया दर्शन सारे भारत के बुद्धिजीवियों के बीच विचार-मन्थन की मुख्यधारा बन चुका था।

ईशोपनिषद मूलत: यजुर्वेद का हिस्सा है। यह उसका चालीसवां अर्थात आखिरी अध्याय है। इस वेद की रचना महाभारत संग्राम से से दो ढाई सौ साल पहले ही पूरी हो चुकी थी। यजुर्वेद की रचना के अन्तिम कालखण्ड में अगर इसके अन्तिम अध्याय में अध्यात्म दर्शन को विषय बनाया गया है तो जाहिर है कि महाभारत से दो ढाई सौ साल पहले ही इस तरह का चिन्तन देश में काफी चल पड़ा था। महाभारत संग्राम में हुए महाविनास ने इस दर्शन को एक निर्णायक दिशा प्रदान की और इसे देश की विचारधारा की सबसे बड़ी विशेषता बना दिया। और जब यह दर्शन जबर्दस्त विचार प्रवाह के रूप में देश के मानस पर असर दिखाने लगा तो तक के विचारकों का यजुर्वेद के इस अन्तिम अध्याय पर निगाह जाना स्वाभाविक ही था क्योंकि इस छोटी सी किताब में उन्हें अपने सभी विचारों का अतिप्राचीन और प्रामाणिक प्रतिपादन नजर आया होगा। उपनिषदें लिखी जानी तब शुरू हो चुकी होगी और यजुर्वेद के इस अन्तिम अध्याय को उन्होंने अपनी प्राचीनतम उपनिषद के रूप में मान्यता दे दी। नाम दिया ईशोपनिषद। और क्या नाम देते भला? नाम क्या हो, यह समस्या तो उनके- सामने आई ही होगी और इस अध्याय के पहले मन्त्र 'ईशावास्यायमिदं सर्वम्' के पहले शब्द 'ईशा' के आधार पर ही इसे नाम दे दिया गया- ईशोपनिषद। और इस तरह इस उननिषद के नामकरण की समस्या का समाधान निकाल लिया गया।

तो क्या है ईशोपनिषद का दार्शनिक प्रतिपादन? क्या है इन मन्त्रों की विषयवस्तु? चूँकि मन्त्र केवल अठारह हैं और उनमें कई विषयों का प्रतिपादन कर दिया गया है, इसलिए स्वाभाविक है कि इसमें विषयों को स्पर्श भर किया गया है और बाकी का विस्तार पाठकों और व्याख्याकारों के जिम्मे छोड़ दिया गया है। इसलिए अचरज नहीं कि जिस किसी ने भी उपनिषद पर व्याख्या लिखने की सोची, उसने दूसरी किसी उपनिषद पर व्याख्या लिखी हो या न लिखी हो, पर ईशोपनिषद पर व्याख्या लिखे बिना उसका मन नहीं माना।

तो फिर आपका मन उसका दर्शन जाने बिना कैसे मान सकता है? ईशोपनिषद का दर्शन हमें ठीक से समझ में आ जाए, इसलिए जरूरी है कि हम उस समय के सन्दर्भ को ठीक से समझ लें। बाकी उपनिषदों की रचना तब हुई जब महाभारत का महाविनाश हो चुका था। पर जिसे आगे चलकर ईशोपनिषद कहा गया उसकी रचना तो यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के रूप में महाभारत से कुछ सदी पहले हो चुकी थी। इसलिए महाभारत के परिणामस्वरूप उपजा इस संसार और इस शरीर के प्रति जश्वरता का जैसा भाव बाद के उपनिषदों में मिलता है, वैसा इमें ईशोपनिषद में नहीं मिलता। ऐसा नहीं है कि इस संसार और इस शरीर को अन्तिम मान लिया गया है। पर ऐसा भी नहीं कि इस संसार को एकदम बेकार मानकर नकार दिया गया हो। इस उपनिषद के पहले मन्त्र में ही सांसादिक भोग के महत्व को रेखांकित किया गया है और उपनिषकार ने साफ कहा है कि भई, इस संसार का उपभोग तो बेशक करो, पर त्याग के भाव से ही। वेदान्त ने आगे चलकर दो तरह के सत्यों की बात की- पारमार्थिक या वास्तविक सत्य यानी ब्रह्म, तथा व्यावहारिक सत्य यानी यह संसार। वेदान्त इस जगत को मिथ्या मानता है। बेशक इस संसार को हम जितना भी मिथ्या मान लें, पर नजर तो हमें यही दुनिया आती है, रहना और भुगतना तो हमें इसी दुनिया में है। इसलिए जगत को मिथ्या मानने वाले वेदान्त भी इसे एकदम नकार नहीं पाया और उसने इसे पारमार्थिक यानी वास्तविक सत्य चाहे न माना हो, पर चूंकि जीवन का सारा व्यवहार हमें इसी जगत में करना है, इसलिए वेदान्त ने भी इसे व्यवहारिक सत्य माना है। इस लिए ईशोपनिषद कहती है- तेन त्यक्तेन भुंजीथा: अर्थात दुनिया का उपयोग त्याग पूर्वक करो, तो विद्वान लोग यह मानने का लोभ छोड़ नहीं पाते कि इस कथन में वेदान्त के दो तरह के सत्य की अवधारणा के बीज छिपे पड़े हैं। अर्थात् व्यावहारिक सत्य मानकर इस दुनिया में व्यवहार बेशक करो, इसका उपभोग बेशक

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

जमीन से जुड़े अधिकारी हैं ललित मोहन रयाल

ज्यादातर देखा जाता है कि किसी बड़े पद को प्राप्त कर लेने वाले अपने बीते हुए दिनों, अपने गाँव-घर, स्थिति-परिस्थिति को एकदम भूल जाते हैं और हड़बड़ में निर्णय लेने लगते हैं या चाटुकारिता के साथ एक विशेष घेरे में कैद सा हो जाते हैं। लेकिन पद प्राप्त करने के बाद भी अपनी जड़ों से जुड़े रहने वाले हमेशा मिट्टी की खुशबू से होते हैं। ऐसे ही अधिकारियों में से हैं- ललित मोहन रयाल।

श्री रयाल की प्रशंसा कर दी जाए तो वह खुश हो जाएंगे, ऐसी बात नहीं है। नैनीताल जिले के जिलाधिकारी श्री रयाल का कद इसलिये ही बड़ा दिखाई देता है क्योंकि वह लोकव्यवहार के साथ तर्कसम्मत बातें करते व सहते हैं। लोक प्रशासन की पढ़ाई उन्होंने की होगी और उच्चपद पर आने के सारे मानक उनके पास होंगे बात यह नहीं है। इससे भी ज्यादा उनके पास ग्रामीण माटी की सी सुगन्ध है। उनके निर्णय लेने की क्षमता और बात-व्यवहार को पहचाने की क्षमता अद्भुत है, जो किसी भी बड़े अधिकारी में होनी ही चाहिये। उनका व्यक्तित्व उनकी कृतियों में झलकता है, जिसे हर पढ़ने-लिखने वाले जानते हैं। जिस प्रकार का लेखन उनकी कृतियों में दिखाई देता है, वही सब उनके व्यवहार में भी है।

एक ताजा उदाहरण हाल के दिनों में देखने को मिला जब जिला विकास प्राधिकरण के जेई की जनप्रतिनिधियों की शिकायत पर जिलाधिकारी रयाल ने फटकार लगाते हुए कहा- 'कोई पुराने घर की मरम्मत कर रहा है, छोटा मकान बना रहा है, बनाने दीजिए। कोई एक दुकान बना रहा उसे भी कमर्शियल न मानें। जनता काफी त्रस्त है, उनके घाव पर मरहम लगाइए। कोई अपनी छत भी ठीक नहीं कर सकता क्या।'

शिकायत पर डीएम की यह फटकार कोई दिखावा या लोकप्रियता हासिल करने या जनप्रतिनिधियों को खुश करने के लिये नहीं बल्कि उनकी सच्चाई है। अक्सर होने यह लगा है कि नियम-कानून का रौब दिखाकर अनावश्य रूप से दबाव बनाने, परेशान करने की प्रथा भी चल पड़ी है। ऐसे में आम जनता टूट जाती है। समाज को दिशा देना, उसे सुधारना हमारे जन प्रतिनिधियों, हमारे प्रशासन का कार्य है। श्रीमान रयाल भी अपने कर्तव्यों के अलावा समाज को दिशा देने वाले ठोस अधिकारी के रूप में हैं।

पिघलता हिमालय के स्वामित्व के सम्बन्ध में

फार्म 4

(नियम 8 देखिये)

1. प्रकाशन स्थल	:	शक्ति प्रेस, जे.के.पुरम्, सेक्टर-डी, मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)
2. प्रकाशन अवधि	:	साप्ताहिक
3. मुद्रक का नाम	:	गीता उप्रेती
(क्या भारतीय नागरिक है?)	:	भारतीय
यदि विदेश है तो मूल देश	:	
पता	:	शक्ति प्रेस, जे.के.पुरम्, सेक्टर-डी, मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)
4. प्रकाशक का नाम	:	गीता उप्रेती
पता	:	पिघलता हिमालय, जे.के.पुरम्, सेक्टर-डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)
(क्या भारतीय नागरिक है?)	:	भारतीय
यदि विदेश है तो मूल देश	:	
5. सम्पादक का नाम	:	गीता उप्रेती
(क्या भारतीय नागरिक है?)	:	भारतीय
यदि विदेश है तो मूल देश	:	
पता	:	पिघलता हिमालय, जे.के.पुरम्, सेक्टर-डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)
6. उक्त व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों, तथा जो पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	

मैं श्रीमती गीता उप्रेती एतद् द्वारा यह घोषणा करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक- 24.2.2026

ह0/श्रीमती गीता उप्रेती

प्रकाशक के हस्ताक्षर

फसक

दाज्यू, अब तो होली से पहले ही सनी जाने वाले ठैरे

गनगनाट और डड़ाडाड़ का असर भी नहीं होता ही है बल

दाज्यू, जमाना बड़ा बेढप होने जा रहा है। अब तो होली से पहले ही सनी जाने वाले ठैरे। सोशल मीडिया में धिरक्योई दिखाने की होड़ मच चुकी है। मधुली भी नाच रही थी- 'बलम पिचकारी तूने जो मारी'। मगरु दा परेशान हो चुका है कि घरवाली सड़क में धिरक रही है। दाज्यू, अब तो सबकुछ अपटूडेट पसन्द करने लगे हैं कौन पूछे मगरु दा की बात? करने दो उसे गनगनाट। वैसे भी अब गनगनाट और डड़ाडाड़ का असर नहीं होता है बल।

सोशल मीडिया से चौंधिया चुकी आँखों ने शर्म और बेशर्म की परिभाषा बदल दी है शायद। नंगोई में उतर जाना समाज में प्रसाद मान लिया गया है। कब्बू भौजू लट्ट-मुंगर लेकर एक शहर से दूसरे शहर फटक मार रही है। लगता है इस बार होली में ही 2027 का टिकट उन्हें मिल जाएगा।

दाज्यू, रुद्रपुर में पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल और पालिकाध्यक्ष मीना शर्मा के बीच चल रही घमाघम में किच्छा विधायक तिलकराज अपनी ताल देकर मिसाने की कोशिश कर रहे हैं बल। डीडीहाट में भी और ही हो रही है हो। विधायक बिशन दा को उनकी ही पार्टी वाले मंगलगीत सुनाने निकल पड़े हैं। ब्लाक प्रमुख नरेन्द्र धामी का मूड भी चुनाव के लिये लग रहा है। दाज्यू, हरक सिंह ज्यू बहुत ही फुरड़ी रहे हैं। उनका कहना है- 'चुनाव जीतने वाले को ही टिकट मिलेगा।' अब हरक दा कांग्रेस चुनाव प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष ठैरे जो चाहें करने दो।

दाज्यू, अंकिता न्याय यात्रा संघर्ष मंच ने महापंचायत कर 15 दिन के अन्दर हत्याकाण्ड में शामिल वीआईपी के नाम खुलासा नहीं होने पर आन्दोलन की चेतावनी दी है। होली के दिनों में आन्दोलन की चिंगारी.....। देवों के देव महादेव दुनिया को बचाओ। दाज्यू, दून विश्व विद्यालय समेत देश के साथ नामी संस्थानों के वैज्ञानिकों के ताजा शोध में चिन्ता जताई जा रही है कि पहाड़ों में हल्की बारिश से भी धराली जैसी आपदा आ सकती है। वैसे, उत्तराखण्ड में 11 जगहों पर ग्रीन सेस की वसूली शुरू हो चुकी है। लगता है हरियाली बचेगी। दूसरे राज्यों से प्रदेश में आने वाले वाहनों से ग्रीन सेस की वसूली होनी है। इसका पहला ट्रायल हरिद्वार के नारसन बॉर्डर पर हुआ।

दाज्यू, लोहाघाट के सरकारी स्कूल के समय बाजार घूमते मिले तीन मास्साब। खण्ड शिक्षा अधिकारी के औचक निरीक्षण में जब यह पता चला तो स्पष्टीकरण मांगा गया। दाज्यू, सब सनी गए ठैरे। किस-किस को पकड़ा जाए? कोई जपते-जपते फटक मार रहा है, कोई सटक रहा है, कोई भटक रहा है। मास्साब तो मास्साब ही ठैरे। दाज्यू, ग्राम दोपहरिया किच्छा निवासी महिला को आस्ट्रेलिया भेजने के नाम पर उससे 8 लाख रुपये ठगी कर ली। दाज्यू, वीजा बनाने के नाम पर ठगी करने वाला का कहना है- 'आस्ट्रेलिया में युद्ध के आसार हैं।' भगवान जाने, कहाँ युद्ध होगा और कौन वीजा बनाएगा। इसी तरह सितारगंज के शक्तिफार्म निवासी युवती को शादी का झांसा देकर दुष्कर्म कर दिया बल। सबकी अपनी गनगनाट-फनफनाट होने वाली ठैरी, देख-सुन कर चलना होगा।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

जसुली बूढ़ी.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

की इन अमूल्य धरोहरों के लिये अभी बहुत कुछ करना है। इन्हें संरक्षित करने की दिशा में सबका योगदान जरूरी है। स्व. उप्रेती की स्मृति में प्रतिवर्ष होने वाले आयोजन ने इस धारा को बढ़ाया है इसके सुखद परिणाम आने लगे हैं। आज हम जसुली अमा के साथ तत्कालीन अंग्रेज कमिश्नर हैनरी रेमजे की सूझ को याद करते हैं, जिन्होंने पैदल यात्रा पथ पर यात्रियों, विद्यार्थियों, श्रद्धालुओं के ठहरने के लिये सुविधाएं दीं। उन यादों को इतिहास के पन्नों के साथ धरातल पर बनाए रखने के लिये जसुली बूढ़ी लला शौक्याणी धर्मशाला जीर्णोद्धार एवं प्रबन्धन समिति लगातार जुटी है। विगत वर्ष में जसुली लला स्मृति मंच ने खीनापानी, सुयालबाड़ी (नैनीताल) में अपना वार्षिकोत्सव मनाया। जिसमें जसुली के बंशजों के अलावा उनके चाहने वाले बड़ी संख्या में उपस्थित थे। शासन-प्रशासन द्वारा सुध लेने पर यह धर्मशाला आकर्षण बनी हुई है लेकिन इसकी सुरक्षा उपाय किये जाने जरूरी हैं। समिति इस बार पिथौरागढ़ के कनालीछीना तहसील क्षेत्र स्थित सतगढ़ धर्मशाला में आयोजन का निर्णय ले चुकी है। पुरातन धरोहर संजोने के क्रम में पर्यटन विभाग ने इस ओर दृष्टि की तो यह धर्मशाला खूबसूरत दिखाई दे रही है। इस स्थान पर आगामी 18 अप्रैल को सायंकाल सिंमी

सतगढ़ स्थित धर्मशाला

ता।वकल पूरा पाठ और 19 अप्रैल को वार्षिकोत्सव समारोह किया जाना है। इसके लिये हम सभी को जुटते हुए हर प्रकार से सहयोगी बनना चाहिये। जसुली की धर्मशालाएं इतिहास के अलावा व्यवहार में भी हमारे समाज का मार्गदर्शन करती रहें इसके लिये ठोस कार्य करते रहने हैं।

समिति के अध्यक्ष फली सिंह दताल ने इस अभियान से जुडे सभी लोगों की सराहना करते हुए कहा कि सतगढ़ में होने वाले वार्षिकोत्सव का मुख्य उद्देश्य समिति के कार्य की प्रगति पर चर्चा होगी। समिति का भरसक प्रयास है कि अधिक से अधिक धर्मशाला की खोज, खाता-खतोनी निकलवाने, उसमें बोर्ड लगवाने का कार्य हो। कहा कि आप सभी हमारे मार्गदर्शक, आमटीकर और पथ प्रदर्शक हो। गलतियां मनुष्य से हो सकती हैं लेकिन श्रेष्ठता क्षमा करने में है। इस अभियान में किसी प्रकार दिखावा नहीं है बल्कि हमारा उद्देश्य इतिहास की उन धरोहरों सुरक्षित रखना है जो विलुप्त होने की कगार पर हैं।

सतगढ़ आयोजन के लिये महानुभाव सहयोग के लिये आगे आने लगे हैं उनमें विधायक फकीर राम टम्टा, सावित्री दुग्ताल, रवि रिचा दताल, इं.मंगल सिंह कुटियाल, सुश्री नन्दा राणा इत्यादि हैं। इस बीच हल्द्वानी में पिघलता हिमालय के संस्थापक सम्पादक स्व.आनन्द उप्रेती जी के स्मृति समारोह पर अभियान को जो धार दी गई। (आयोजन की विस्तृत रिपोर्ट अगले अंक में दी जा रही है, जो होली अंक भी होगा।)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मार्मिकता

सिन्टोल (मैना) पक्षी के अति चतुराई का परिणाम अचानक विलुप्तता तो नहीं

जगदीश सिंह बजवाल

'अति सर्वत्र वर्जयेत्' अति हर जगह वर्जित है.अति किसी चीज का होना या किया जाना बुरा है। सिन्टोल(मैना) पक्षी की चतुराई, होशियारी सृजनात्मकता, बुद्धिमत्ता का अधिक प्रयोग करना वर्ष 2025 तक दृष्टिगत, पक्षी सिन्टोल का गाँव, कस्बे, पहाड़ों के शहरों से विलुप्तता का कारण तो नहीं बना है?

'सिन्टोल (मैना) तथा गौरया' पक्षी मानव घरों के आस-पास ही रहना पसन्द करते हैं। गौरया का शारीरिक संरचना आकार में सिन्टोल (मैना) पक्षी के मुकाबले कुछ छोटी होती है। सिटोल (मैना) पक्षी नर-मादा में पहचान करना मुश्किल रहता है। अधिकांश शारीरिक रंग भूरा सिर तथा पूंछ में चमकदार काला रंग, पैर,चौंच पीले रंग व आँखों के ऊपर-नीचे पीली धारी से घिरी होती है तथा पंख के अन्दर वाले भाग में सफेद रंग कुछ हिस्से में दिखाई देती है। किन्तु गौरया नर पक्षी के पंख हल्के लाल-काले रंग से मिश्रित तथा छाती में मटमेला रंग का होता है। मादा चिड़िया का सम्पूर्ण रंग मटमेला रहता है। घर के ऊपर छज्जे के छिद्र या घास वाले छतों के किनारो के बीच घौंसला बनाना इन चिड़ियों की विशेषता है।

पहाड़ के गाँव में पूर्व में लोग मकान पत्थर, लकड़ी, मिट्टी, छत स्लेट, सालम घास, घांस-फूसों से ढालदार बनाते थे। जिनमे छत के छज्जे से नीचे जो लम्बी पट्टी लकड़ी का ऊपरी हिस्से में लगा रहता है, बीच-बीच में त्रिभुजाकार, वर्गाकार आकृति के छिद्र में अन्दर से खोखला होता था, जिसमें ये चिड़िया घौंसला बनाते थे। घांस-फूस के छतों में छज्जे के किनारे-किनारे भी घौंसला बनाकर अपने बंशवृक्ष का फैलाव करते थे। आज के कंकरीट घरों में इस प्रकार की सुविधा न होने पर दोनों चिड़ियां अपने अस्तित्व को बचाने में जद्दोजहद करते नजर आते हैं। आज आखिर सिन्टोल (मैना) विलुप्त हो ही गये। एक दुखद कहानी लेखक के कलम से लिखी जा रही है।

सिन्टोल (मैना) पक्षी अति चालाक, एकजुटता से काम करने वाले पक्षी अपने से ताकतवर जानवर, चिड़ियों के छक्के छुड़ा देते हैं। यद्यपि बांस के झुरमुट या झुपराले माल्टा, पंय्या आदि पेड़ों में शाम होते ही खूब धींगा-मुश्ती गोधुली तक चलती थी किन्तु प्रातः होते फिर अपनी दल भावना में काम प्रवृत्ति इनमें गज़ब की रहती थी किन्तु अब सब कुछ नदारत है।

जब कभी बिल्ली इनके घौंसलों के नजदीक पहुँचकर इनके चूजों को निवाला बनाने की कोशिश करती है तब नर-मादा के अलावा सभी सिन्टोल एक साथ हमलावर हो जाते थे। कौआ, बाज, लमपूछी जैसे ताकतवर चिड़ियां सिन्टोल के हमले होने पर दुम-दबाकर भाग खड़े होने में देरी नहीं करते। लेखक की दृष्टि में अति बुद्धिमान पक्षी जिसकी गतिविधियों पर बचपन से आज तक नज़र बनी रही है।

कुछ समय से सिन्टोल (मैना) को जीवन्तता के लिए संघर्ष करते देखा गया था। अपनी सृजनशील प्रवृत्ति, वैकल्पिक भोजन व्यवस्था की तलाश, सुरक्षित आवास हेतु जंगलों में भी भटकते देखे गए।

पहाड़ों पर खेती-बाड़ी का काम आजकल नहीं के बराबर किया जाता है, चिड़ियों के लिए चुगने हेतु भोजन की उपलब्धता में कमी, घरों पर कम निर्भरता के अतिरिक्त जंगली फल-फूल, बीज, दाने चुगना भी प्राणधारण के लिए अति आवश्यक हो गया।

अक्सर देखा जाता है कि प्रवासी तोता पहाड़ों पर झुण्डों में आकर मेल, तिमूर फल-बीच चट कर जाते हैं जो सिटोंल को नागवार गुजरा, ईर्ष्या भी करने लगे थे। उन्होंने भी इसे खाना शुरू कर दिया तथा जो भी जंगल में इस प्रकार के भोजन मिलता खाना शुरू कर दिया.. संभवतः लेखक की सोच यह भी कहता है कि कहीं अनुकूल परिस्थिति न होने के साथ-साथ बिशाक्त भोजन के सेवन ने अचानक विलुप्तता तक न पहुँचा दिया हो?

अब पहाड़ के गाँव घर, कस्बा, शहरों में सिटोल पक्षी का टीटी-चीची का संगीतमय सुमधुर गीत का सुनाई देना बन्द हो चुका है, अति कष्टदायक तथा मानव अस्तित्व के लिए कुछ-न-कुछ संकेत अवश्य है. सिन्टोल (मैना) पक्षी अतीत की कहानी बन चुकी है। जिसे भविष्य की पीढ़ीयों को सुनाते रहेंगे।

सेवानिवृत्त सैनिकों को सेवा का एक और अवसर

रानीखेत। कुमाऊँ व नागा रेजिमेंट के सेवानिवृत्त सैनिकों को सेवा का एक और अवसर दिया जा रहा है। वे अब डिफेंस सिक्योटिरी कोर (डीएससी) में भर्ती होकर दोबारा योगदान दे सकेंगे।

कुमाऊँ रेजिमेंट सेन्टर मुख्यालय के ऐतिहासिक सोमनाथ मैदान में सिपाही जनरल ड्यूटी (जीडी) व सिपाही क्लर्क (एसडी) के पदों के लिए 9 से 14 मार्च तक यह भर्ती रैली होगी। इसमें शारीरिक दक्षता परीक्षा की कसौटी पर फिट पूर्व सैनिक ही हिस्सा ले सकेंगे। केआरसी मुख्यालय भर्ती कार्यालय के अनुसार सिपाही जीडी पद पर भर्ती लिये 31 मार्च 2024 से 28 फरवरी 2026 तक अवकाश प्राप्त तथा आयुसीमा 46 वर्ष से कम वाले पूर्व सैनिक हिस्सा ले सकेंगे। साथ ही अवकाश प्राप्ति की अवधि दो वर्ष से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

सिपाही क्लर्क (एसडी) के लिए 31 मार्च 2021 से 28 फरवरी 2026 तक अवकाश प्राप्त ऐसे भूतपूर्व सैनिक जिनकी सेवानिवृत्ति अवधि 5 वर्ष से अधिक न हो और आयु 48 वर्ष से कम हो, वही भर्ती रैली में हिस्सा लेंगे। भर्ती कार्यालय के अनुसार 9 मार्च की प्रातः 6.30 बजे से अभ्यर्थियों की जाँच होगी। 12 व 13 मार्च को प्रातः 6.30 बजे प्रारम्भिक स्क्रीनिंग व शारीरिक मापदण्ड परीक्षा होगी। भर्ती प्रक्रिया में तय समय पर पहुँचने के साथ ही अभ्यर्थियों को डिस्चार्ज बुक, एजीआई एक्सटेंडेड इंश्योरेंस, एटीसी, शैक्षिक व अवतीर्ण प्रमाण पत्र, एक्स टीए पर्सनेल की मूल प्रतियां व पासपोर्ट साइज की 16 रंगीन फोटो साथ लानी अनिवार्य होंगी।

कपकोट के शामा मुख्यालय में शराब की दुकान के विरोध में महापंचायत

बागेश्वर। बढ़ते नशे के विरोध महिलाओं तथा जनप्रतिनिधियों ने जबर्दस्त आन्दोलन शुरू कर दिया है। जिला पंचायत सदस्य विजया कोरंगा एवं क्षेत्र पंचायत सदस्य पुष्पा रौतेला के नेतृत्व में ग्राम सभा रातिर कैठी, मलखा डुंगरचा, कीमू तथा गोगिना के ग्रामीणों ने शामा मुख्यालय में स्थित अंग्रेजी शराब की दुकान में तालाबन्दी को लेकर महापंचायत की। इसमें निर्णय लिया गया कि जब तक शराब की दुकान नहीं हटा ली जाती यह आन्दोलन जारी रहेगा। बैठक में महिलाओं ने गाँवों को नशामुक्त बनाने की मांग उठाते हुए कहा 7 जनवरी को शमा में आयोजित बहुउद्देशीय शिविर में जनप्रतिनिधियों के अनुरोध पर उन्होंने अपने लेटरहेड के माध्यम से सम्बन्धित विभागो को शराब की दुकान बन्द करने के लिए एक माह की समय सीमा दी थी लेकिन इसके बावजूद अभी किसी भी विभाग ने पत्र का संज्ञान नहीं लिया और न ही ग्रामीणों से सम्वाद की पहल की। ऐसे में क्षेत्रहित में तालाबन्दी और आन्दोलन ही रास्ता बचा है। शामा में हुई महापंचायत के बाद चारों ओर हलचल है कि आन्दोलनों के इस दौर में यह दूरस्थ क्षेत्र अब जाग उठा है तो बड़े आन्दोलन तय हैं।

ज्योतिष की बातें- 269

23 फरवरी 2026 को मंगल अपनी समराशि कुम्भ में प्रवेश करेगा। वहाँ पर राहु से युति होगी तो गुरु की शुभ दृष्टि भी पड़ेगी अतः मंगल में उग्रता की कुछ कमी रहेगी। कुल मिलाकर मंगल शुभ होगा। फलदीपिका के अनुसार मंगल तीसरे, छठवें व ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है तथा कर्क व सिंह राशियों के लिए योगकारक होता है। अतः अगले 38 दिन मंगल साहस, पराक्रम, वाहन, मकान, खेलकूद आदि अपने कारक विषयों में धनु, कन्या, सिंह, कर्क व मेष राशि के जातकों के लिए सामान्य शुभफल प्रदान करेगा।

26 फरवरी 2026 को बुध कुम्भ राशि में वक्री हो जाएगा अतः अगले 20 दिन बुध से प्राप्त शुभाशुभ फूलों में प्रबलता देखने को मिलेगी।

28 फरवरी 2026 को स्थानभेद से बुध कुम्भ राशि में पश्चिम दिशा में अस्त हो जाएगा अतः अगले 14 दिन बुध से प्राप्त शुभाशुभ फल अल्पमात्रा में प्राप्त होंगे। शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 158

विवाह की उम्र

आजकल एक ट्रेंड चल रहा है कि बराबर की उम्र में शादी करना चाहिए। 25 साल का लड़का 25 साल की ही लड़की ढूँढ़ता है और 40 साल का आदमी भी विवाह के लिए 40 साल की महिला ढूँढ़ता है। ऐसा ही लड़कियों का भी विचार है कि लड़का बराबर की उम्र का होना चाहिए। 35 वर्ष की महिला 35 वर्ष का ही पुरुष ढूँढती है, उसे 40 वर्ष का पुरुष अधिक उम्र का लगता है। दैनिक भास्कर में प्रकाशित एक सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार उम्र में बड़े अन्तर वाली शादियों में खुशहाली भरपूर होती है क्योंकि यह रिश्ता जीवन में सन्तोष देता है। पहले कहीं-कहीं पति की उम्र पत्नी से 10-15 वर्ष तक अधिक होती थी। इस समय वैश्विक स्तर पर विवाहित जोड़ों में उम्र का औसत अन्तर 4. 2 वर्ष है। उक्त सर्वे के अनुसार लगभग सौ वर्ष पूर्व 1920 में अमेरिका में पति औसतन 4-5 वर्ष बड़े और भारत में 7-8 वर्ष बड़े होते थे। भारत में अब 2026 में यह अन्तर लगभग शून्य हो चुका है और कलह भी अब चरम पर है।

हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार विवाह की उम्र कन्या के लिए 12 से 14 वर्ष के मध्य कही गई है और वर की उम्र लगभग 25 वर्ष कही गई है। इसलिए लड़के लड़कियों को अपनी मूर्खता को त्याग कर विवाह की सही उम्र का विचार करना चाहिए क्योंकि भारत में पति-पत्नी का सम्बन्ध स्थाई होता है न कि अमेरिका की तरह अस्थाई। मेरी बातों से किसी का सहमत होना आवश्यक नहीं है। हाँ, जो सहमत हैं उन्हें मेरी इन बातों का प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

आपके पत्र

साल में एक बार रक्त दान जरूर करें

डा. सन्तोष मिश्रा की माताश्री के देहावसान पर उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए प्रभु से उनकी आत्मा की शान्ति तथा परिजनों को धैर्य प्रदान करने हेतु प्रार्थना करते हैं।

उनके द्वारा देहदान का संकल्प प्रसंशनीय है। देहदान, नेत्रदान एवं रक्तदान ये तीनों दान अति महत्वपूर्ण हैं। सही मायने में मानव सेवा में महत्वपूर्ण योगदान है और सभी धर्मों में श्रेष्ठ मानव धर्म ही है। देहदान, नेत्रदान निरोगी काया पर निर्भर है किन्तु रक्तदान में कोई बन्धन नहीं है। किसी को भी जीवन दान देने का उचित माध्यम है।

महोदय, आपके पत्र के माध्यम से सभी लोगों से विशेषकर युवावर्ग से निवेदन करना चाहूँगा कि साल में कम से कम दो बार रक्तदान जरूर करें इससे दूसरे को जीवन तो मिलेगा ही साथ ही नया रक्त संचार होने से आपकी काया (शरीर) भी निरोगी रहेगी। किडनी, हार्ट, लिवर एवं अन्य शरीर के अंग स्वस्थ्य रहेंगे।

रक्तदान महादान

-उमेश चन्द्र पाण्डे
जगदम्बा नगर, हल्द्वानी

चम्पावत में बनेंगी जिम कार्बेट ट्रेल

चम्पावत। प्रसिद्ध शिकारी और वनों के रखवाले जिम कार्बेट को याद करते हुए चम्पावत में 4.5 करोड़ रुपये से जिम कार्बेट ट्रेल की तैयारी है। जिम कार्बेट से जुड़ी 6 ट्रेल और पर्यटन सुविधाओं के विकास के लिये चार कराड़ रुपये जारी हो चुके हैं। इससके पर्यटकों के लिये रोमांच और स्थानीय के लिये आजीविका का जरिया बनेगा।

बताते चलें कि सौ साल पूर्व 1907 से 1938 तक जिम कार्बेट ने खतरनाक अभियानों में हिस्सा लिया, उनकी कई यादें इतिहास में दर्ज हैं। इन्हीं को लेकर अब ट्रेल विकसित किया जा रहा है। एक दौर में कार्बेट ने चम्पावत क्षेत्र में आदमखोर बाघ व गुलदार को मार लोगों को राहत दी है। उनकी कई कहानियां अभी प्रचलित हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सातताल के जंगल में सैलानियों पर रोक

भीमताल। शहर के जूनस्टेट स्थित जंगल में महिला को मारने के बाद सातताल के जंगल में सैलानियों और पक्षी प्रेमियों की आवाजाही पर वन विभाग ने रोक लगा दी है। विभाग की टीम आदमखोर वन्यजीव को पकड़ने के लिये गश्त कर रही है। रेंजर विजय मेलकानी ने बताया कि वन्य जीव पकड़ के लिये ट्रैप कैमरे व डाक्टरों की टीम जुटी हुई है।

आठ लाख के सीसी टीवी कैमरे लगेंगे

रामनगर। पुलिस की ओर से लगाए गए 5 दर्जन से अधिक सीसीटीवी कैमरों को ठीक करने के लिये नगरपालिका ने आठ लाख रुपये का बजट दिया है। विधायक निधि से वर्ष 2022 में लगे कैमरे रखरखाव अनुबन्ध का भुगतान न होने से खराब हो गये थे। ऐसे में पुलिस ने पालिका से बजट की मांग की थी। कैमरों के लिये नया कन्ट्रोल रूम भी बनाया जा रहा है।

आदिकैलास-नाभिडांग हेलीसेवा से जुड़ेंगे, मुख्यसचिव ने दिए हैं निर्देश

देहरादून। आदि कैलास, नाभिडांग और जॉलीकांग को हवाईसेवा से जोड़ने की तैयारी चल रही हे। इस सम्बन्ध में मुख्य सचिव आनन्दबर्द्धन ने कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि सहस्त्रधारा से पूर्णागिरी के लिए भी हवाई सेवा शीघ्र शुरू किये जाने के लिए कार्ययोजना तैयार की जाए। मुख्य सचिव की अध्यक्षता में नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण की उत्तराखण्ड एयर कनेक्टिविटी स्कीम के सम्बन्ध में हुई बैठक में उन्होंने जानकारी ली और कहा कि प्रदेश में हवाई सम्पर्क बढ़ाए जाने की सम्भावनाएं तलाशे जाने के लगातार प्रयास किए जाएं।

उन्होंने प्रदेश में पर्यटन सर्किट के विकास को ध्यान में रखते हुए हैलीपैड और हैलीपोर्ट सुविधाओं को बढ़ाए जाने पर जोर दिया। इस अवसर पर सचिव सचिन कुर्वे ने कि प्रदेश में हेलीपैड और हेलीपोर्ट विकसित किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। शीघ्र ही नैनीसैनी एयरपोर्ट को एयरपोर्ट ऑथोरिटी ऑफ इण्डिया को हैंडओवर किया जाएगा।

नजूल भूमि को फ्रीहोल्ड कराने की मांग

नैनीताल। भवाली नगर में व्यापार मण्डल अध्यक्ष नरेश पाण्डे और समाजसेवी शीलू कुमार के नेतृत्व में लोगों ने प्रदर्शन करते हुए भवाली में वर्षों से नजूल भूमि पर बसे लोगों के खिलाफ नोटिस भेजने पर नाजारी दिखाते हुए उनकी भूमि फ्रीहोल्ड करने की मांग की है। ईओ को ज्ञापन सौंपते हुए कहा कि मांग न मानने पर उग्र आन्दोलन किया जाएगा।

डीडीए पर्वतीय क्षेत्रों के हित में नहीं

अल्मोड़ा। पर्वतीय क्षेत्रों में जिला विकास प्राधिकरण को समाप्त करने की मांग को लेकर संघर्ष समिति का धरना जारी है। इस दौरान लोगों ने प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए चेतावनी दी कि जब तक डीडीए समाप्ति का शासनादेश जारी नहीं हो जाता संघर्ष समिति प्रत्येक सप्ताह गांधी पार्क में सरकार के खिलाफ धरना प्रदर्शन पर अडिग रहेगी। धरना स्थल पर प्रदर्शन कारियों ने कहा कि जिला विकास प्राधिकरण पहाड़ी क्षेत्रों के लिये कतई अनुकूल नहीं है। यहाँ के लोगों को इससे कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। समिति इसे हटाने की लम्बे समय से मांग कर रही है, लेकिन सरकार की ओर से फिर भी इस पर कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। सदस्यों ने सरकार से जल्द से जल्द डीडीए हटाने की मांग की। धरने में पूर्व पालिकाध्यक्ष व संयोजक प्रकाश चन्द्र जोशी, ललित मोहन पन्त आदि थे।

सितारगंज की सड़कें जाम मुक्त होंगी

सितारगंज। नगर के प्रमुख चौराहों व सड़कों पर जाम से छुटकारा के लिये राजस्व विभाग, नगर पालिका, एनएचए आई और पुलिस की संयुक्त टीम ने एसडीएम रविन्द्र जुंवाठा की अध्यक्षता में निरीक्षण किया। इस दौरान एसडीएम ने अतिक्रमण चिन्हित करने के निर्देश दिये ताकि इन्हें हटाते हुए आवागमन सुविधा युक्त किया जा सके।

हरिद्वार, रुड़की आधुनिक शहरी केंद्र विकसित योजना

हरिद्वार। हरिद्वार और रुड़की को आने वाले वर्षों में आधुनिक शहरी केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना है। इससे पहले राज्य सरकार आमजन के सुझावों का फीडबैक ले रही है ताकि जनता से प्राप्त प्रत्येक सुझाव का गम्भीरता, पारदर्शिता एवं नियमानुसार परीक्षण किया जा सके। साथ ही महायोजना जनअपेक्षाओं के अनुरूप और व्यावहारिक बन सकें।

भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित अमृत 1.0 योजना के अन्तर्गत प्रस्तावित हरिद्वार और रुड़की महायोजना- 2041 के प्रारूप पर राज्य सचिवालय, देहरादून में आवास सचिव डॉ. आर.राजेश कुमार की अध्यक्षता में नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग की समीक्षा बैठक हुई। जिसमें इन दो क्षेत्र के दीर्घकालिक विकास को ध्यान में रखते हुए महायोजना के विभिन्न प्रावधानों पर विस्तृत चर्चा की गई।

परिक्रमा

पारस्परिक स्थानान्तरण की मांग को लेकर गरजे कर्मी

हल्द्वानी/अल्मोड़ा। पारस्परिक स्थानान्तरण समेत पदोन्नति की मांग को लेकर मिनिस्ट्रीयल कर्मचारियों में रोष बढ़ता जा रहा है। इसी क्रम में कर्मचारियों ने विभाग परिसर में प्रदर्शन कर कार्य बहिष्कार किया। उत्तरांचल लोक निर्माण विभाग मिनिस्ट्रीयल एसोसिएशन के बैनर तले कर्मचारियों ने प्रदर्शन करते हुए कहा कि वह लम्बे समय से पारस्परिक स्थानान्तरण की मांग कर रहे हैं लेकिन उनकी मांग को अनदेखा किया जा रहा है। जिस कारण वह आन्दोलन को मजबूर हैं। दूसरी ओर 27 सूत्रीय मांगों को लेकर डिप्लोमा इंजीनियर्स महासंघ मुखर हो गया है। महासंघ से जुड़े अभियन्ताओं ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए वेतन विसंगतियों को दूर करने, पदोन्नति बहाल करने, उत्तराखण्ड पेयजल निगम और जल संस्थान का एकीकरण करने की मांग मुख्य रूप से उठाई।

नशा मुक्ति के नाम पर भी होता खेल

हल्द्वानी। विगत दिवस कमिश्नर दीपक रावत ने हीरानगर स्थित निर्वाण पुनर्वास केन्द्र पर छापामारी कर भारी अव्यवस्थाएं पकड़ी। जाँच में पाया कि तीस लोगों के उपचार की अनुमति के बावजूद भर्ती होने वालों की संख्या अधिक है और उनका रिकार्ड भी नहीं है। पुरुषों के नशा मुक्ति केन्द्र में महिलाएं भी रखी गई हैं। लापरवाही पर सीएमओ को केन्द्र का लाइसेंस निरस्त करने के लिये कहा गया।

बताते चलें कि नशा उन्मूलन के नाम पर इस प्रकार के केन्द्र कई जगह चलाए जा रहे हैं तो भली बात है लेकिन जानकारी के आभाव में कई प्रकार के तनाव व मानसिक रोगी इसमें फंस जाते हैं। साथ ही कुछ केन्द्रों की गड़बड़ी से अन्य सभी केन्द्रों को भी सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है।

टिहरी गढ़वाल हाउस के सौदे की चर्चा

नई दिल्ली। लगभग 3.2 एकड़ में फैला टिहरी गढ़वाल हाउस नाम से चर्चित महाराजा मनुजेन्द्र शाह की सम्पत्ति एक हजार करोड़ में सौदे की चर्चा हो रही है। इस भव्य बंगले के खरीददार स्थानीय उद्यमी का नाम लिया जा रहा है। यह ऐतिहासिक सम्पत्ति देश की राजधानी के सबसे महंगे रियल एस्टेट क्षेत्र लुटियंस बंगलो जोन में स्थित है। इसमें विशाल बागान, खुले हवेली जैसे परिसर और भव्य आवासीय संरचना है।

मंदिर माला मिशन में संवरेंगे देवालय

नैनीताल। मानसखण्ड मन्दिर माला मिशन के तहत 47 मन्दिरों को संवारा जाएगा ताकि इन ऐतिहासिक मन्दिरों को संरक्षण के साथ धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिल सके। जिला पर्यटन अधिकारी अतुल भण्डारी ने बताया कि मानस खण्ड मन्दिर माला मिशन के तहत कुमाऊँ में मन्दिर समूहों का सर्किट तैयार किया जा रहा हे। तीन चरणों में इस योजना को धरातल पर उतारा जाएगा। पहले चरण में नैनीताल जिले के कैंची धाम, नयना देवी के साथ ही अल्मोड़ा के पाँच, पिथौरागढ़ के दो, बागेश्वर के दो, चम्पावत के चार व यूएस नगर के एक मन्दिर में सुन्दरीकरण किया जा रहा है। पहले चरण के कार्य पूरे होने पर दूसरे व तीसरे चरण में शामिल मन्दिरों का भी सुन्दीकरण किया जायेगा, जिससे यहाँ सुविधाओं का विस्तार होगा।

पहले चरण में 16 मन्दिरों के सुन्दरीकरण के के बाद विभाग की ओर से दूसरे चरण में अल्मोड़ा का झांकरसैम, पिथौरागढ़ का कोटगाड़ी, बेरीनाग, थलकेदार, मलयनाथ इत्यादि हैं।

किमतोली-रौशाल मार्ग को स्वीकृति

लोहाघाट। जनहित एवं स्थानीय मांग को देखते हुए 20 किमी लम्बे किमतोली रौशाल मोटर मार्ग को उच्च स्तरीय वित्त समिति से स्वीकृति प्रदान की गई है। मुख्यमंत्री घोषणा के अन्तर्गत इस मोटर मार्ग पर हॉटमिक्स कार्य कराया जाएगा। इस कार्य के लिए अधिशासी अभियन्ता लोनिवि, निर्माण खण्ड लोहाघाट द्वारा 1218.96 लाख की अनुमानित लागत का आगणन तैयार किया गया है। इस परियोजना से 18 ग्रामों को सीधे लाभ है।

मुख्य सड़कें लोनिवि के हवाले होंगी

हल्द्वानी। आर्थिक भार से दब चुके नगर निगम ने मुख्य सड़कें लोक निर्माण विभाग के हवाले करने की तैयारी कर ली है। हल्द्वानी नगर निगम के पास साठ वार्डों से जुड़े आन्तरिक मार्गों और मुख्य सड़कों को मिलकर कुल 928 किमी लम्बी सड़कों का जाल है लेकिन इनके रखरखाव को मात्र दो इंजीनियर हैं। इसके अलावा ग्रामीण निर्माण विभाग के एक इंजीनियर की सप्ताह में तीन दिन निगम में तैनाती के आदेश पूर्व में हुए थे। बजट के अभाव में अधिकतर निगम की सड़कों का हाल खराब रहता है। इन परेशानियों को देखते हुए सड़कें लोनिवि को देने का प्रस्ताव है। नगर आयुक्त पारितोष वर्मा ने बताया है कि मुख्य सड़कों को लोनिवि को सौंपने की योजना है। इसके लिए निगम व विभाग के अधिकारी संयुक्त सर्वे करेंगे। इसके बाद प्रस्ताव तैयार कर हस्तान्तरण की प्रक्रिया शुरू होगी।

लालसिंह रौतेला की यादें शेष

बागेश्वर/हल्द्वानी। कमस्यार घाटी के नरगोली गाँव निवासी पूर्व सैनिक लाल सिंह रौतेला का विगत दिवस निधन हो गया। सेना के सिग्नल कोर से हवलदार पद से सेवानिवृत्त लाल सिंह जी का 25 दिसम्बर 1933 को नरगोली ग्राम में गांवली देवी और रतन सिंह रौतेला की पांचवी सन्तान के तौर पर इनका जन्म हुआ। 1962, 1965, 1971 के युद्ध में हिस्सा लेने वाले लालसिंह 1977 में सेवानिवृत्त हुए। वे अपने पीछे 85 वर्षीय पत्नी कौशल्या रौतेला सहित भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। पिघलता हिमालय परिवार स्व.रौतेला को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

ब्लाकप्रमुख नैनवाल को श्रद्धांजलि

रानीखेत। विधायक प्रमोद नैनवाल के भाई व भिकियासैंण ब्लाक प्रमुख सतीश नैनवाल के असामयिक निधन से क्षेत्र में शोक की लहर है। कुछ समय से अस्वस्थ्य सतीश ने दिल्ली में दम तोड़ा। पिघलता हिमालय परिवार स्व.प्रमोद नैनवाल को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

ईशोपनिषद.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

और है, इसलिए इसके त्याग का भाव भी बना रहना चाहिए।

इतना भर तो ठीक है। पर अपेन छह मन्त्रों में विद्या और अविद्या तथा असम्भूति और सम्भूति का वर्णन कर ईशोपनिषद ने इस संसार का महत्व वेदान्त की तुलना में कहीं ज्यादा मना है। विद्या और असम्भूति दोनों शब्द पर्यायवाची हैं, अर्थ है ब्रह्मा की प्राप्ति कराने वाला ज्ञान। उधर अविद्या और सम्भूति भी पर्यायवाची हैं, अर्थ है सांसारिक ऐश्वर्य की प्राप्ति कराने वाला ज्ञान। सम्भूति का शाब्दिक अर्थ है-इकट्ठा करना, यानी सांसारिक ऐश्वर्य जुटाना जिसे अविद्या यानी अज्ञान का पर्यायवाची इस उपनिषद ने माना है। तो ज्यादा महत्वपूर्ण क्या है? ब्रह्मज्ञान या सांसारिक ऐश्वर्य की प्राप्ति? यानी विद्या या अविद्या? असम्भूति या सम्भूति? ज्ञान या अज्ञान? हम हिन्दुस्तानियों को दर्शन की जैसी ट्रेनिंग मिली है, उसके तहत हम सहसा कह उठेंगे कि क्या रखा है अविद्या में, यानी क्या रखा है सांसारिक ऐश्वर्य जुटाने में। विद्या ही सब कुछ है, ब्रह्म ज्ञान ही सबकुछ है। लगता है जब यजुर्वेद का यह चालीसवां अध्याय लिखा गया होगा, तब भी इस तरह मानने वाले लोग बढ़ने लगे होंगे जो विद्या यानी ब्रह्मज्ञान को एकमात्र सत्य मानकर इस दुनिया के ऐश्वर्य को नकार देते होंगे। पर ईशोपनिषदकार उनसे सहमत नहीं। उसने बहुत ही बढ़िया बात कह डाली। कह डाला कि वे लोग तो अन्धेरे में हैं ही जो इस संसाद के ऐश्वर्य को यानी अविद्या को जीवन का अन्तिम लक्ष्य मान लेते हैं। पर वे तो उससे भी ज्यादा अन्धेरे में हैं जो महज विद्या यानी ब्रह्मज्ञान के चक्कर में पड़े रहते हैं। मन्त्र है- अंधे तमः प्रविशन्ति ये अविद्याम् उपासते, ततो भूय इव ते तमः या उ विद्यायां रताः। क्या जीवन के प्रति इससे ज्यादा डायनेमिक दृष्टि सम्भव है? नहीं ना? यदि इस उपनिषद का महत्व है।

हमारे पुराने साहित्य में एक कहावत खूब चलती रही है और यह कहावत है भी खूब मजेदार। क्या है कहावत? यह कि सारी उपनिषदें क्या हैं मानो गउएँ हैं, कृष्ण हैं ग्वाला, उपनिषदों का दूध है गीता जिसका पान कोई कोई विरला अक्लमन्द ही कर सकता है- सर्वा उपनिषदः गावो दुग्धं गीतामृतं महत, इत्यादि। इस कहावत का मतलब साफ है कि उपनिषदों के अध्यात्मदर्शन के जितने भी महत्वपूर्ण बिन्दु हैं वे सभी गीता में मिल जाते हैं। दूसरे बिन्दुओं के बारे में जो हम जानते नहीं, पर एक बिन्दु के बारे में यह कहावत शतप्रतिशत सच है। गीता में अनेक दार्शनिक पक्षों का विवेचन बेशक है, पर उसका मुख्य विषय कर्मसिद्धान्त है। कोई गीता का नाम ले ही ले तो एक श्लोक सहसा याद आ जाता है- 'कर्मण्येवा धिकारस्ते' यानी कर्म करते जाओ, उसी पर तुम्हारा अधिकार है। कर्मदर्शन के साथ गीता की पहचान ऐसी जुड़ गई है कि तिलक महाराज ने जब गीता की व्याख्या लिखी तो उसका नाम ही रख दिया- कर्मयोग शास्त्र। जिस ईशोपनिषद की चर्चा हम आज कर रहे हैं, उसमें इस कर्मसिद्धान्त के बीज हमें मिलते हैं। ईशोपनिषद और गीता के रचनाकाल में ढाई सौ साल का ही फर्क है। गीता बाद में लिखी गई और जब लिखी गई तो उसे सलीके से महाभारत के भीष्मपर्व का अभिन्न हिस्सा बना दिया गया। गीता में जिस कर्मसिद्धान्त का अत्यन्त परिपक्व विवेचन है, ईशोपनिषद में उसका प्रारम्भ नजर आता है और लगता है इन दोनों किताबों के बीच के समय में इस सिद्धान्त पर खूब चर्चा और बहस होती रही होगी जिसका परिपाक गीता में हुआ। कर्म सिद्धान्त का बेसिक अर्थ यह है कि हमारा कर्म ही इस दुनिया में हमारे बन्धन और पुनर्जन्म का कारण है, लेकिन अगर फल की इच्छा से रहित होकर निष्काम कर्म किया जाए तो फिर हमारा कर्म हमें बाँधता नहीं। इस उपनिषद में एक ही मन्त्र (संख्या 2) में, जिसे पहले मन्त्र से जोड़कर पढ़ना पड़ेगा, हमें यह दर्शन समझा दिया गया है। मन्त्र है- कुर्वन्नेवेह कर्माणि, जिजीविषेत शतं समाः, एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति, न कर्मा लिप्यते नरे। अर्थात् जीवन के सौ साल, यानी सारा जीवन कर्म करते करते ही जीना है। त्यागपूर्वक जीवन का उपभोग करेंगे तो यह कर्म हमारे लिए बन्धन का कारण नहीं बनेगा। जरा भाषा की और शैली की सादगी पर गौर फरमाइए। हम पता नहीं आपको बात समझा पाए या नहीं समझ पाए पर ईशोपनिषद ने आसानी से सारी बात समझा दी है।

हमने उसे बाद में उपनिषद बना दिया, पर ईशोपनिषद मूलतः तो उपनिषद थी नहीं। थी वह यजुर्वेद का हिस्सा ही। इसलिए वेदों के मूल विषयवस्तु की तरह उपनिषद में भी अग्नि, पूषा जैसे देवताओं की स्तुति की गई है। बस फर्क यह है कि जहाँ वेदों में देवताओं की प्रार्थना सांसारिक उन्नति की प्राप्ति के लिए ही प्रायः की गई है वहाँ ईशोपनिषद में देवताओं की प्रार्थना सांसारिक उन्नति की प्राप्ति के लिए ही प्रायः की गई है। वहाँ ईशोपनिषद में देवताओं से सत्य से साक्षात्कार की प्रार्थना की गई है। पूषा की स्तुति करते हुए ईशोपनिषदकार ने कहा कि सत्य का मुंह सोने के पात्र से ढका पड़ा है, हे पूषा तुम उस पात्र को हटा दो ताकि हम सत्य का दर्शन कर सकें। सोने के पात्र से तात्पर्य सांसारिक आकर्षणों से है जिनके असर में असर में आकर हम सत्य से दूर हट जाते हैं। मन्त्र याद कर लेने लायक है- हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यपिहितं मुखम्, तत्वं पूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये (ईशोपनिषद 15)

आत्मा के स्वरूप के बारे में ईशोपनिषद में पाँच-छह मन्त्र लिख दिए हैं। शैली वही है- आत्मा अजर है, अमर है, वगैरह। यह कोई ऐसी बात नहीं जिसे इस उपनिषद की खास बात मानी जाए। जो खास बातें हम बाता पाए हैं, उनका सन्देश यह है कि ईशोपनिषद का दर्शन अपने समय के सन्दर्भों से कटा हुआ नहीं है। जीवन के प्रति दृष्टिकोण में जो परिवर्तन उन दिनों आ रहा था उसकी एक छटा हमे इस छोटी ही महा किताब में पूरी तरह से मिल जाती है, यह कि संसार की सत्यता-असत्यता पर और कर्मसिद्धान्त पर खूब ले-दे तब के विचारकों में हो रही थी, सत्य को जानने की अकुलाहट बढ़ रही थी।

(साभार नवभारत टाइम्स)

एनएच-09 फोरलेन चौड़ीकरण

टनकपुर क्षेत्र के 12 राजस्व ग्रामों में भूमि रजिस्ट्री व भू-प्रकृति परिवर्तन पर रोक

चम्पावत। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-125 (नया एनएच-09) के सितारगंज से टनकपुर खण्ड (52.200 किमी) तक प्रस्तावित फोरलेन चौड़ीकरण परियोजना के दृष्टिगत जिला प्रशासन द्वारा महत्वपूर्ण प्रतिबन्धात्मक आदेश जारी किए गए हैं।

जिलाधिकारी मनीष कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि परियोजना से प्रभावित होने वाले तहसील पूर्णागिरि (टनकपुर) क्षेत्र के 12 राजस्व ग्रामों में भूमि के क्रय-विक्रय, रजिस्ट्री/बैनामा तथा भूमि की प्रकृति परिवर्तन (कृषि से गैर-कृषि) पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी गई है। यह प्रतिबन्ध बमनपुरी, फागपुर, ज्ञानखेड़ा, पचपकरिया, भजनपुर, मोहनपुर, चन्दनी, टनकपुर, मनिहारगोठ, बनबसा, देवरामपुर उर्फ सीतापुर तथा बिचई ग्रामों में लागू रहेगा।

जिलाधिकारी ने स्पष्ट किया कि प्रस्तावित राजमार्ग एलाइनमेंट की वर्तमान मध्य रेखा से दोनों ओर 50-50 मीटर की परिधि में स्थित भूमि पर किसी भी प्रकार का लेनदेन या प्रकृति परिवर्तन अनुमन्य नहीं होगा। साथ ही राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा तैयार भूमि अधिग्रहण योजना तथा राष्ट्रीय राजमार्ग अधिनियम की धारा 3-। के अन्तर्गत अधिसूचित/प्रस्तावित भूमि पर भी यह प्रतिबन्ध पूर्ण रूप से प्रभावी रहेगा। उन्होंने बताया कि यह कदम भविष्य में भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया को पारदर्शी, व्यवस्थित और विवाद-मुक्त बनाए रखने के उद्देश्य से उठाया गया है, ताकि किसी प्रकार के अवैध लेनदेन, कृत्रिम मूल्य वृद्धि या अनधिकृत निर्माण की स्थिति उत्पन्न न हो। उपजिलाधिकारी टनकपुर को निर्देश दिए गए हैं कि आदेश का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित कराया जाए।

जिला प्रशासन ने आम नागरिकों से अपील की है कि अधिसूचित क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाली भूमि के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की खरीद-फरोख्त, निर्माण कार्य या आपसी समझौता करने से पूर्व प्रशासन से जानकारी अवश्य प्राप्त करें। एनएच-09 फोरलेन परियोजना पूर्ण होने पर क्षेत्र में यातायात सुविधा, सड़क सुरक्षा, पर्यटन गतिविधियों तथा व्यापारिक संपर्कों को उल्लेखनीय बढ़ावा मिलने की सम्भावना है। जिला प्रशासन ने आश्वस्त किया है कि अधिग्रहण से सम्बन्धित समस्त कार्यवाही विधिसम्मत एवं नियमानुसार की जाएगी।

धनगड़ी पुल बनने से कुमाऊँ-गढ़वाल की राह आसान

रामनगर। एनएच 309 पर धनगड़ी पुल बनने से अब कुमाऊँ-गढ़वाल की राह आसान हो गई है। 220.9 मीटर लम्बा पुल 17.39 करोड़ की लागत से बनकर तैयार हुआ है। पिछले वर्षों में उफान पर आए धनगड़ी नाले में कई लोगों की जान जा चुकी है। 2020 में धनगड़ी और पनोद नाले पर पुल निर्माण की स्वीकृति हुई थी और अब जाकर यह कार्य हो पाया है।

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान)
मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
मो.न. 8958525979, 9411134775
फोन सम्पर्क- 05961-222236
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

फाल्गुन मास में सरोवर नगरी तर

ताल तो वही है, आने वालों को नजारा बदला दिख रहा

नैनीताल। सरोवर नगरी फाल्गुन मास में तर इसलिए दिखाई दे रही है क्योंकि पर्यटकों की आवाजाही फिलहाल मस्त है। चूंकि कोरान काल के बाद से कई तरह की दिक्कतों ने इस नगरी को घेरे रखा है। हालात ढप से बेढप बनते रहे हैं इस शहर के। ताल तो वही है लेकिन आने वालों को नराजा बदला दिख रहा है। प्रशासन की सौन्दर्यकरण स्कीम ने चौड़ीकरण से लेकर सुधारीकरण का जो अभियान चलाया उसमें वह सब हुआ जो प्रशासन चाहता था। ऐसे में ताल के पास जाते दिखाई देने वाले गांधी जी की प्रतिमा अब दूसरे कौने में है, जबकि बैठे हुए गांधी जी और तीन बन्दरों की प्रतिमा नई आभा के साथ दिखाई दे रही है। मालरोड से नीचे वाली ताल से लगी सड़क पर कार्य चल रहा है। इसी प्रकार नयना देवी मन्दिर के मुख्य द्वार के पास मन्दिरमाला अभियान के तहत नये तरीके से कार्य जारी है। नैनीताल का फ्लैट जो बड़े आयोजनों के लिये विशाल आंगन सा था, वर्तमान में नई सज्जा के साथ छोटा दिखाई दे रहा है। कुल मिलाकर सरोवर नगरी की सजावट और दिखावट के लिये अभी बहुत कुछ होने वाला है। इस अभियान कितना समय लगेगा और कैसा होगा आने वाले दिनों का नैनीताल, यह समय बता देगा।

फिलहाल शहर के पुराने लोग मंथन में हैं और अपनी आँखों के सामने अपने शहर की इस तरावट को देख कर अपने विचार रख रहे हैं कि क्या से क्या हो गया। बुद्धिजीतियों के इस शहर में पिछले तीन सालों में कई तरह के आन्दोलन प्रदर्शन देखने को मिले जिससे शहर की बातचीज की हवा भी तीखी हो चली है। कुछों ने अपने तेवर तीखे कर दिये तो अधिकांश धारा के साथ चलने में भलाई मान रहे हैं।

स्वच्छता, पर्यावरण, भाईचारे की बातें अब पहले की तरह नहीं हो रही हैं। सैलानियों की आवत पर कारोबार चलने की कामना करने वाले भी पहले शहर को लेकर बहुत चिन्तित हो जाते थे लेकिन ऐसे समय में जब प्रशासन ने ही सारा बीड़ा उठा लिया है तो लगता है शेष चुप्पी कर गये। हाँ, नगर पालिका परिषद की चैयरमैन बीच-बीच में कई मामलों को लेकर अपना पक्ष रखती हैं क्योंकि वह जनता की प्रतिनिधि हैं।

हाँ तो बात कारोबार के तरावट की करें तो निश्चित रूप से वर्तमान में ठीक है। क्योंकि इससे पहले बंदिशों के चलते और उसके बाद यातायात की ठेलम-ठेल से कारोबार प्रभावित हुआ था। नए वर्ष का जश्न हो या क्रिसमस का उत्सव, इस बार नैनीताल में पहले जैसी भीड़ नहीं हुई थी। होटल एण्ड रेस्टोरेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष दिग्विजय बिष्ट कहते हैं- अव्यवस्थाओं के चलते विदेशी पर्यटक अब नैनीताल शहर की अपेक्षा आसपास के क्षेत्र में आना ज्यादा पसन्द कर रहे हैं। प्रशासन की ओर से व्यवस्थाएं दुरुस्त करने के साथ विदेशों में प्रचार प्रसार हो तो ज्यादा संख्या में विदेशी पर्यटक नैनीताल पहुँचेंगे। जिला पर्यटन अधिकारी अतुल भण्डारी कहते हैं- 2021 में कोविड के दौरान जिले में मात्र 633 विदेशी पर्यटक पहुँचे थे लेकिन उसके बाद से लगातार विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है।

कुल जमा नैनीताल में पर्यटकों की रफ्तार बढ़ी है लेकिन शहर के मिजाज बदल से गये हैं।

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

फाल्गुन मास/होली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-
इन्द्र सिंह नेगी
बीरभट्टी, बिष्ट स्टेट
नैनीताल

एस.एस. जंगपांगी
(अ.प्रा.उपमहाप्रबन्धक दूरसंचार)
जोहार नगर, भोटिया पड़ाव
हल्द्वानी

के.आर. सिंह
मधुवन इन्क्लेब,
रेशम बाग के पास, कुसुमखेड़ा
हल्द्वानी

देवेन्द्र सिंह धर्मशक्तू
जोहार नगर
हल्द्वानी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)